NTA NET EXAM PAPER-2 HISTORY

Medieval history

UNACADEMY PLUS SUBSCRIPTION 10% DISCOUNT

My referral code

Pman27878-7003

unacademy

मामलूक वंश

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)

- **राजधानी** - लाहौर
- ऐबक (ऐ-चन्द्रमा और बेक-स्वामी) का शाब्दिक अर्थ चन्द्रमा का स्वामी होता है। वहीं मिनहाज के अनुसार ऐबक के हाथ की उंगली टूट गयी थी जिसके कारण उसको ऐबकेशल (हाथ से लूला) उपनाम दिया गया।
- **उपाधि-** पीलबख्श (हाथियों का दान देने वाला); लाख बख्श (लखता); कुरान ख्वाँ; हातिम द्वितीय>)
- न ही ऐबक ने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और न ही सिका चलवाया।
- यही कारण है कि फिरोज तुगलक ने खुत्बे में दिल्ली के पूर्व सुल्तानों की सूची में ऐबक का नाम शामिल नहीं किया। तीन वर्ष बाद गौर के सुल्तान महमूद से ऐबक को दास्य मुक्ति पत्र प्राप्त हुआ। उसने ऐबक को दासता से मुक्त किया और सर्वप्रथम सुल्तान कहा)
- ऐबक दास (मामलूक) वंश का संस्थापक था। भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक ऐबक को ही माना जाता है।

unacademy

कुतुबुद्दीन ऐबक

- **प्रारम्भिक जीवन-** कुतुबुददीन, ऐबक जनजाति का तुर्क था।इसके माता-पिता तुर्किस्तान के निवासी थे। माँ-बाप गरीब थे इसलिए बचपन मेंही इसे काजी अब्दुल अजीज कोकी को कानपुर (फारस) में बेच दिया। काजी अपनी पवित्रता के लिए प्रसिद्ध था।
- काजी की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्रों ने ऐवक को गजनी में गोरी के हाथों बेच दिया। गोरी ने इसे अमीर-ए-अखुर का पद दिया। 1192 ई. के बाद गोरी ने ऐबक को भारतीय प्रदेशों का सूबेदार नियुक्त कर दिया 1192 से 1206 ई. तक ऐबक ने गोरी के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया। 1206 ई.. में ऐबक शासक बना।
- गोरी की मृत्यु के पश्चात् उसके तीन गुलाम ऐबक,नासिरुद्दीन कुबाचा एवं ताजुद्दीन एल्दौज उसके साम्राज्य के तीन दावेदार हुए

unacademy

कुतुबुद्दीन ऐबक

- फखेमुदब्विर ऐबक का पहला वजीर था फखेमुदब्विर भारत के सबसे पहले मुस्लिम राजनीतिक विचारक वे।
- ऐबक ने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम और अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिदों का निर्माण करवाया।दिल्ली में कुतुबमीनार की नींव उसने ही रखी।
- मृत्यु - ऐबक की लाहौर में चौगान (आधुनिक पोलो) खेलते समय 1210 ई. में मृत्यु हो गई। उसे लाहौर में दफनाया गया।
- आरामशाह (1210-1211 ई.)
- यह ऐबक की मृत्यु के पश्चात् लाहौर में शासक बना। अबुल फजल के अनुसार आरामशाह ऐबक का भाई था। आरामशाह का शासन केवल 8 माह का रहा। इल्तुतमिश ने आरामशाह को हरा दिया। आरामशाह के दो मुख्य तुर्क सेनानी अकसुनकर एवं 'फरुखशाह युदध में मारे गये। आरामशाह को लाहौर के सरदारों का समर्थन प्राप्त था वहीं इल्तुतमिश को दिल्ली के सरदारों का।

unacademy

LIKE/SHARE/COMMENT REVIEW/RATING

unacademy

THANK YOU